

Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

Impact Factor

4.1625(UIF)

ISSN

2230-7850

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या



Research by



रविदास अहिरवार

रविदास अहिरवार

शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि.
सागर (म.प्र.)

सारांश :- भ्रष्टाचार केवल भारत चीन और पाकिस्तान जैसे विकासशील देशों की
समस्या नहीं बल्कि अनेक यूरोपीय देशों में भी इसका प्रभाव है समृद्ध विकसित देशों
में भ्रष्टाचार की कल्पना तक नहीं की जा रही थी परन्तु अब ... पृष्ठ क्र.- 47

Editor - In - Chief - H. N. Jagtap



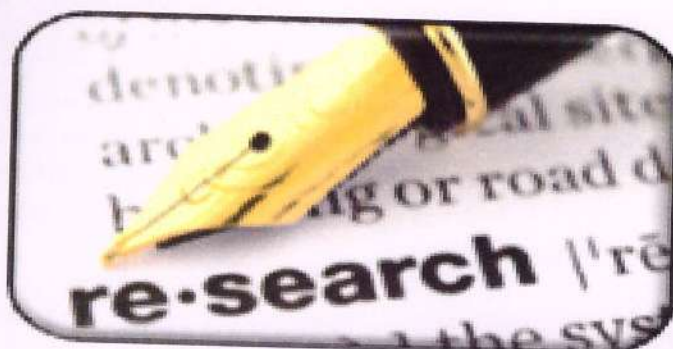
Indian Streams Research Journal

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN NO:-2230-7850

Impact Factor : 4.1625(UIF)

Vol.- 6, Issue - 2, March -2016



Sr. No	Title And Name Of The Author (S)	Page No
1	गाँधी चिंतन में पर्यावरण चेतना तेजराम सिंह , हिमांशु बौड़ाई	1
2	जैन एवं हिन्दू धर्म में प्रतिपादित कर्म सिद्धान्त दुर्गा जैन	6
3	औरंगाबाद जिल्हा गाय पशुधन एक भौगोलिक अभ्यास Arjun Katke and Satish Gavit	9
4	देवदेवळांचे बाजारीकरण अर्थव्यवस्थेला बळकटी-एक चिकित्सक अभ्यास जयंत एम. बनसोड	13
5	हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात मराठवाड्यातील महिलांचा सहभाग प्रशांत अ. साबळे	18
6	भगवतीचरण वर्मा की औपन्यासिक चेतना विनोद कवडुजी डोमकावळे	24
7	महाराष्ट्रातील समाज प्रबोधनाची चळवळ: विविध प्रवाह व परिणाम महेश मोटे	28
8	मनरेगा (MNREGA): ग्रामीण भागातील रोजगाराचा एक सशक्त आधार जमीर मगबुल तांबोळी	33
9	सामाजिक परिवर्तन में आरक्षण की भूमिका अशोक कुमार	36
10	समेकित बाल विकास सेवाओं सम्बन्धी लक्षित महिलाओं की सूचना आवश्यकताओं का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। अर्चना गुप्ता, जे.पी. श्रीवास्तव, डी.पी. राय	41

11	अष्टाचार एक सामाजिक समस्या रविदास अहिरवार	47
12	पुणे शहरातील सरकारी (महाराष्ट्र शासन 'आरे') व सहकारी (कात्रज दूध डेअरी) या दोन्ही डेअरीच्या कार्यक्षेत्रातील काम करणाऱ्या कामगारांच्या आर्थिक व सामाजिक समस्यांचा तुलनात्मक अभ्यास. (संदर्भ - २००९-१० ते २०१४-१५) जयश्री बबन कांबळे	51
13	चर्चचा ऐतिहासिक अभ्यास वळवी विश्वास , सुलोचना अशोक पाटील	55
14	भारतातील लघु उद्योगांचे ग्रामीण विकासातील महत्त्व कुरुमकर श्रीकृष्णाजी शिवाजी , बोबडे मंजुश्री विलासराव	58
15	बाल साहित्य और मीडिया विद्या पी वेणुगोपाल , के जयलक्ष्मी	63

Indian Streams Research Journal

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2230-7850

Impact Factor : 4.1625(UIF)

Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016



भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या



रविदास अहिरवार
शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि. सागर (म.प्र.)

प्रस्ताविक

भ्रष्टाचार केवल भारत चीन और पाकिस्तान जैसे विकासशील देशों की समस्या नहीं बल्कि अनेक यूरोपीय देशों में भी इसका प्रभाव है समृद्ध विकसित देशों में भ्रष्टाचार की कल्पना तक नहीं की जा रही थी परन्तु अब जो तथ्य सामने आ रहे हैं वे महत्वपूर्ण तो हैं ही चिन्तनीय भी हैं इन दिनों जर्मनी के लोकप्रिय नेता व पूर्व चैंसलर पर भी रिश्वतखोरी का आरोप सिद्ध हो चुका है। फ्रांस में घोटाले के आरोपित वहां के राष्ट्रीय विधानसभा के स्पीकर को भी १८ महीने का कारावास दिया गया था रूस के राष्ट्रपति येल्टसिन की बेटी के स्विस् बैंक के खाते में लाखों डालर जमा पाये गये।

डी.एच.बेली (D.H.baikey, cf,doughlas and jhonson,1971) ने भ्रष्टाचार को इस प्रकार बताया है :“निजी लाभ के विचार के परिणामस्वरूप सत्ता का दुरुपयोग जो धन सम्बन्धित नहीं भी हो सकता है। “एन्ड्रिस्की (Indriski,cf. machael clark, 1983) ने कहा है “ ऐसे तरीकों में सार्वजनिक शक्ति का निजी लाभ के लिए प्रयोग जो कानून का उल्लंघन करता है। “मौरिस सैफेल (morris szeptel cf, machael Clarke, 1983) ने कहा है “भ्रष्टाचार वह व्यवहार है मानदण्डों और सार्वजनिक भूमिका निर्वाह के कर्तव्यों को संचालित करने या निजी लाभों के लिये पद के उचित उपयोग से विचलन होता है।

“जे.नाय (J.nye,1967,410-) का कहना है ” कि भ्रष्टाचार निजी लाभों के लिये सार्वजनिक पद का दुरुपयोग दर्शाता है।”

सामान्यतः आज भ्रष्टाचार का अर्थ रिश्वत या उसके किसी रूप से लगाया जाता है यद्यपि यह सत्य नहीं है क्योंकि भ्रष्टाचार तो अश्लीलता भी है गैर सलीनता भी है वैश्यावृत्ति भी भ्रष्ट है। पुरुष या स्त्री को किसी भी प्रकार के दबाव में काम करवाना भी भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आना चाहिए। भारत में भ्रष्टाचार की अपनी एक अलग अवधारणा है अवधारणा क्या दरअसल में यह एक ऐसा विचार है जिस पर विश्वविद्यालयों में एक नया विषय या संकाय ही खोला जा सकता है। समाज विज्ञान के कुछ विषयों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं अपराधशास्त्र आदि में भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में कुछ अध्याय पढ़ाये जा रहे हैं। किन्तु ये कम हैं किसी सलिल सरिता की तरह तो नहीं किन्तु महानगर से निकलने वाले नाले की तरह भ्रष्टाचार सम्पूर्ण समाज को दूषित कर रहा है।

रॉबर्ट के. मर्टन ने प्रकट तथा अप्रकट प्रकार्य में भेद करते हुए लिखा है कि प्रकट प्रकार्य प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने वाले वे परिणाम हैं जो सामाजिक व्यवस्था में अनुकूल तथा समायोजन लाते हैं एवं अप्रकट प्रकार्य वे परिणाम हैं जो सामाजिक व्यवस्था में समायोजन या अनुकूल तो लाते हैं परन्तु व्यवस्था के सदस्यों द्वारा न तो मान्य होते हैं न इच्छित।

उसी प्रकार सरकार कोई भी योजना गरीबों के हित में ध्यान रखकर बनाती है और उसको संचालन करती है लेकिन उसी व्यवस्था में सरकारी योजनाओं और गरीब व्यक्तियों के बीच कई लोग इसका गलत तरीके से फायदा उठाते हैं जिसे हम भ्रष्टाचार कह सकते हैं जो न तो सरकार को स्वीकार है और न ही समाज को।

भ्रष्टाचार की दृष्टि से भारत वर्ष २००१ में ७२ पर रहा जबकि वर्ष २००० में भारत ६६ वे स्थान पर था। बर्लिन स्थित भ्रष्टाचार विरोधी गैर सरकारी संस्था 'ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल' ने जून २००१ में जो सूची जारी की उसमें फिनलैंड को सबसे कम भ्रष्ट राष्ट्र मानते हुए प्रथम स्थान दिया। जबकि बांग्लादेश को सूची में सबसे नीचे स्थान दिया एवं इंग्लैंड को १३ वां अमेरिका को १७ वां एवं चीन को ६३ वां स्थान पर रखा इस सूची में कुल विश्व के ६१ देश सम्मिलित थे।

२१ वीं शताब्दी के विकासशील भारत में अनेक सरकारी योजनाएँ जो कि समाज के प्रत्येक वर्ग को ध्यान में रखकर तैयार एवं शुरू की गई एवं संचालित भी की जा रही हैं परन्तु इन योजनाओं का लाभ जितना आम व्यक्ति को हुआ उससे अधिक कहीं उन व्यक्तियों को भी लाभ हुआ है जिनको इन योजनाओं से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था जिनमें सरकारी अधिकारी कर्मचारी और संसद में बैठे कानून बनाने वाले भी शामिल हैं इन सबको गरीब की योजनाओं और गरीब की धाली के भोजन की चिन्ता नहीं परन्तु अपने कमीशन और काला धन समेटने की चिन्ता है जो आये दिन देखने को मिल रही है आखिर जो करोड़ों रूपयों के घोटाले जो सामने आये हैं वह पूरा का पूरा पैसा सिर्फ गरीब के हिस्से का है लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है।

आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन सिर्फ स्वार्थ तक ही सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे चाहे वह गरीब का हो या समाज का हो स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता अराजकता और स्वार्थ से युक्त भावनाओं का बोलबाला हो गया है। परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरूप धुंधला सा हो गया है इसका एक मात्र कारण है समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यहीं है इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। कमरतोड़ महंगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरा करने के लिए मनचाहें तरीकों को अपना रहा है। भारत के अन्दर तो भ्रष्टाचार का फैलाव दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। किसी भी क्षेत्र में चलें जाएँ भ्रष्टाचार का फैलाव दिखाई देता है। भारत के सरकारी व गैर सरकारी विभाग इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। आप अपना कोई भी काम करवाना चाहते हैं तो बिना रिश्वत खिलाये काम करवाना संभव नहीं है। मंत्री से लेकर संतरी तक को आपको अपनी फाइल बढ़वाने के लिये पैसे का उपहार चढ़ाना ही होगा। स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं हैं। बस इनके तरीके दूसरे हैं। गरीब परिवारों के बच्चों के लिये शिक्षा सरकारी स्कूलों व छोटे कॉलेजों तक सीमित होकर रह गई है। नामी स्कूलों में दाखिला कराना हो तो डोनेशन के नाम पर मोटी रकम मांगी जाती है। बैंक जो की हर देश की अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ है वे भी भ्रष्टाचार के इस रोग से पीड़ित हैं। आप किसी प्रकार के लोन के लिये आवेदन करें पर बिना किसी परेशानी के फाइल निकल जाए यह तो संभव नहीं हो सकता है। देश की आंतरिक सुरक्षा का भार हमारे पुलिस विभाग पर होता है परन्तु आए दिन यह समाचार आते रहते हैं की आमुक पुलिस अफसर ने रिश्वत लेकर एक गुनाहगार को छोड़ दिया। भारत को यह भ्रष्टाचार खोखला बना रहा है।

भारत के प्रमुख घोटाले :-

- ❖ बोफोर्स घोटाला - ६४ करोड़ रुपये
- ❖ यूरिया घोटाला - १३३ करोड़ रुपये
- ❖ चारा घोटाला - ६५० करोड़ रुपये
- ❖ शेयर बाजार घोटाला - ४००० करोड़ रुपये
- ❖ सत्यम घोटाला - ७००० करोड़ रुपये
- ❖ स्टॉप पेपर घोटाला - ४३ हजार करोड़ रुपये
- ❖ कॉमनवेलथ गेम्स घोटाला - ७० हजार करोड़ रुपये
- ❖ २जी स्पेक्ट्रम घोटाला - २ लाख करोड़ रुपये (अनुमानित)
- ❖ अनाज घोटाला - २ लाख करोड़ रुपये (अनुमानित)
- ❖ कोयला खदान आवंटन घोटाला - १६२ लाख करोड़ रुपये

हमें हमारे समाज में फन फैला रहें इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना होगा प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने को इस भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। यही नहीं शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य ज्ञान को आवश्यक सुविधाएँ भी सुलभ करनी होंगी इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

सरकारी योजनाओं के प्रति व्यक्ति का जहाँ एक ओर अपना रुझान बढ़ा है वहीं दूसरी ओर उससे अधिक वह इन योजनाओं से दूर भी होता जा रहा है इसके कई कारण भी हैं जो कुछ इस प्रकार से देखा जा सकता है।

मार्क्स का अलगव सिद्धांत—

मार्क्स का मानना है कि मानव इतिहास के दो पक्ष हैं : प्रथम यह व्यक्ति का प्रकृति पर अधिकाधिक नियंत्रण का इतिहास है और दूसरा यह व्यक्ति के अधिकाधिक अलगव का सिद्धांत भी है। कार्ल मार्क्स अनुसार अलगव व्यक्ति की वह दशा है जिसमें उसके अपने कार्य एक पराई शक्ति बन जाते हैं।

मार्क्स कहता है कि प्राचीन समय में मनुष्य अपने हाथों और औजारों से उत्पादन करता था न कि मशीनों से इसलिए उसका उत्पादन के साधनों और उत्पादित वस्तुओं और ग्राहकों से सीधा सम्बन्ध होता था। एवं उत्पादन करने पर उसे सन्तोष प्राप्त होता था। किन्तु वर्तमान में इसका उल्टा हो गया है। व्यक्ति अपना श्रम करता है और उसका मूल्य सरकार के द्वारा निर्धारित किया जाता है व्यक्ति को नहीं मालूम होता कि वह कितने मूल्य का कार्य कर रहा है।

आज जितनी भी सरकारी योजनायें संचालित हो रही हैं उनमें मशीनों की उन्नति मानव श्रम को काफी कुछ अनावश्यक बना देती है। जहाँ सरकारी योजनाओं के माध्यम से सरकार गरीब व्यक्ति समाज को मजबूत करना चाहती है वहीं मशीनीकरण उस समाज को विकलांग बना रही है जिससे व्यक्ति सरकारी योजनाओं के प्रति अपने को अलग समझता है, और इसी अलगव का फायदा पूँजीवादी लोग उठाकर लगातार भ्रष्टाचार की शृंखला बना रहे हैं।

भारत सरकार की महात्वाकांक्षी योजना "महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना" की बात करते हैं तो हम पाते हैं कि इस पूरी योजना में प्रत्येक परिवार को 900 दिन रोजगार देने का प्रावधान है एवं मशीनीकरण का उपयोग पूर्णतः वर्जित है लेकिन इस योजना में भी भ्रष्टाचार ने अपनी जगह बना ली है जिसकी जड़े दिन प्रति दिन गहरी होती जा रही हैं। अगर द्वितीय स्तरों समाचार पत्र एवं पत्र-पत्रिकाओं की माने तो ऐसा लगता है भारत में भ्रष्टाचार नहीं भ्रष्टाचार में भारत है क्योंकि आज तक ऐसी कोई योजना जो पूर्ण रूप से बिना भ्रष्टाचार के सफल हो गई हो यहां तक कि खेल जैसे आयोजनों में भी भ्रष्टाचार होता है जो समाज के लिये शर्म की बात है।

मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रिया के माध्यम से तार्किक क्रिया का उल्लेख करते हुए कहा है कि तार्किक क्रिया का सम्बन्ध किसी लक्ष्य के साथ होता है। एक पुल का निर्माण करते समय एक इंजीनियर की क्रिया धन कमाने के लिए प्रयत्नशील व्यापारी की क्रिया तथा युद्ध में सफलता प्राप्त करने के प्रयत्न में लगे हुए सैनिक अधिकारी की क्रिया इसी श्रेणी में आती है।

यही रूप हमारे वर्तमान सामाजिक परिवेश में देखने को मिल रहा है जहाँ देखो वही समाज/व्यक्ति अपना एक निश्चित उद्देश्य बनाकर बैठा है कि उसको सिर्फ अपना भला करना है न कि समाज का चाहे वह अच्छा हो या फिर बुरा व्यक्ति अपना अधिक से अधिक लाभ कमाने के चलते दूसरों के हित का ध्यान नहीं रखता और यही कारण है जिस भ्रष्टाचार की बात हम ऊपर कर चुके हैं कि आखिर मनुष्य मनुष्य इतना खुदगर्ज, इतना करप्ट क्यों बन गया है उसमें ईमानदारी का भाव क्यों नहीं रहा। और फिर उसमें प्रेम भाव क्यों घट रहा है हमें केवल कर्म ही नहीं करना है बल्कि हम सबको मिल जुलकर यह पता लगाना है कि इस मानवीय दुर्दशा का कारण क्या है क्यों भला हम अधिकाधिक स्वार्थी बनते जा रहे अधिकाधिक बेईमान अधिकाधिक अंधविश्वासी और इस दुनिया से डरे-डरे से हैं।

असली भ्रष्टाचार कहीं अधिक गम्भीर होता है भ्रष्टाचार मन के भीतर होता है अपने फायदे की खातिर विचार का प्रयोग है भ्रष्टाचार तब होता है जब मानस में ही अंतर्विरोध होता है तब अंतर्द्वंद्व होता है और वह लंबे समय तक चलता रहता है तब वह भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। अगर विकासशील आजाद भारत के हालात ऐसे ही रहे और भ्रष्टाचार के प्रति जनता समय रहते अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हुई तो सरकारी योजनाएँ एवं गरीबी से छुटकारा पाने वाली योजनाएँ जो समाज कल्याण में चलाई जा रही हैं वे सिर्फ बनेगी और वही कागजों में पूरी हो जायेगी और गरीब जनता उस लाभ से वंचित रहेगी अतः समाज के इस भयंकर रोग भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को आगे आना होगा तभी एक सच्चे राष्ट्र निर्माण की भूमिका होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. झा. सी. एम.-२००४ भ्रष्टाचार समस्या और समाधान. राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2. सिंह निर्मल कुमार-२०००. अपराध और भ्रष्टाचार की राजनीति. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
3. उरमलिया श्रवण कुमार-१९९७ भ्रष्टाचार की तलाश चन्द्रमुखी प्रकाशन
4. राजकिशोर-२००६ नैतिकता के नये सवाल वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
5. सिन्हा सच्चिदानंद-२००७ लोकतंत्र की चुनौतियाँ. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
6. त्रिवेदी. डॉ. आर. एन. डॉ. एम. पी. राय-२०१०२ भारतीय सरकार एवं राजनीति-कॉलेज बुक डिपो जयपुर. पृष्ठ क्र. ५०६
7. राजपूत एन. एस.-२०१३ राष्ट्रीय मासिक पत्रिका मधुर माधुरी. १४४ कोटरा ग्राम कोटरा सुल्तानाबाद भोपाल
८. कृष्णमूर्ति जे. २०११ भ्रष्टाचार दुडे दिसम्बर-२०११. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इण्डिया-पृष्ठ क्रमांक. १२-२१